विशिष्ठ व्याख्यान

# “उर्दू में अफ़साना-निगारी की रिवायत”

दिनांक 13. 11. 2025

डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, वाराणसी के उर्दू विभाग के द्वारा एक विशेष व्याख्यान “उर्दू में अफ़साना-निगारी की रिवायत” का आयोजन किया गया। यह आयोजन IQAC के तत्वावधान में हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मुशर्रफ़ अली, एसोसिएट प्रोफेसर उर्दू विभाग, कशी हिंदू विश्वविद्यालय शामिल हुए।




इस विशेष व्याख्यान के संरक्षक कॉलेज के मंत्री एवम् प्रबंधक श्री अजीत सिंह थे, जबकि अध्यक्षता कॉलेज के कार्यवाहक प्राचार्य प्रोफेसर मिश्री लाल ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रोफेसर मिश्रि लाल ने बहुत ही सरल एवं प्रभावी शब्दों साहित्य और कहानियों के माध्यम से मानव जीवन और मानवता के महत्व पर प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि डॉ. मुशर्रफ़ अली ने अपने व्याख्यान में कहा कि उर्दू में अफ़साना निगारी की एक मजबूत रिवायत रही है। प्रेमचंद की लेखनी से जिस विधा (अफ़साना निगारी) ने चलना सीखा और सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन की सच्चाइयों का दर्पण बनी, आज वह एक विशाल वृक्ष का रूप ले चुकी है। समकालीन परिस्थितियों, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के विविध पहलुओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता उर्दू कहानी में पूर्ण रूप से मौजूद है। इसी विशेषता के कारण ‘अफ़साना’ उर्दू की अत्यंत लोकप्रिय विधा है, जिसके पाठकों की




संख्या भी काफी अधिक है। प्रेमचंद से लेकर आधुनिक युग तक उर्दू कहानीकारों ने ज़िन्दगी के हालात और मुद्दों को अपनी विचारधारा और कलात्मक कौशल के साथ कहानी के कैनवास पर बड़ी ख़ूबी से उकेरा है और अनेक श्रेष्ठ कहानियाँ रची हैं।

इससे पूर्व कार्यक्रम का उद्घाटन पारंपरिक रूप से दीप प्रज्वलन और अतिथियों के स्वागत से किया गया। अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ, शॉल और मोमेंटो देकर किया गया। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य डॉ. शमशीर अली, उर्दू विभाग, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज ने दिया और उन्होंने ही संचालन का कार्य भी संभाला। धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम डॉ. नज्मुल हसन, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज दिय।







इस विशेष व्याख्यान में कॉलेज के छात्र-छात्राएँ तथा विभिन्न विभागों के शिक्षक उपस्थित रहे, जिनमें प्रोफेसर ज़ियाउद्दीन, प्रोफेसर प्रशांत कश्यप, प्रोफेसर राकेश कुमार राम, डॉ. मायक सिंह, डॉ. संजीव प्रियदर्शी, डॉ. अस्मिता तिवारी, डॉ. अनुराग चौरेसिया, डॉ. नीलम सिंह, डॉ. विजय यादव, डॉ. ओम प्रकाश, डॉ. श्वेता मिश्रा और कॉलेज के मीडिया इंचार्ज प्रताप बहादुर सिंह सहित बड़ी तादाद में कॉलेज और उर्दू विभाग, बीएचयू के अनेक शोधार्थी व छात्र-छात्राएँ शामिल रहे।




## شعبہ اردو، ڈی۔اے۔وی۔پی۔جی۔کالج کے زیر اہتمام خصوصی لکچر کا انعقاد

## عصری مسائل اور سماجی زندگی کی عکاسی کی صلاحیت اردو افسانے میں بدرجہ اتم موجود ہے.....ڈاکٹر مشرف علی

13/نومبر 2025ء کو ڈی۔اے۔وی۔پی۔جی۔کالج، وارانسی میں شعبہ اردو اور IQAC کے زیر اہتمام ایک خصوصی لکچر کا انعقاد کیا گیا۔اس خصوصی لکچر میں بطور مہمان خصوصی ڈاکٹر مشرف علی، ایسوسی ایٹ پروفیسر شعبہ اردو بنارس ہندو یونیورسٹی شامل ہوئے۔

اس خصوصی لکچر "اردو میں افسانہ نگاری کی روایت" کے سرپرست کالج کے سیکریٹری اور مینیجر عالی جناب شری اجیت سنگھ رہے جب کہ صدارت کالج کے پرنسپل جناب پروفیسر مشری لال نے کی۔ اپنے صدارتی خطبے میں پروفیسر مشری لال نے بڑے ہی موثر اور آسان لفظوں میں ادب اور افسانوں کے حوالے سے انسانی زندگی اور انسانیت کی اہمیت پر روشنی ڈالی۔

# प्रेमचंद ने शुरू की उर्दू अफसाने की रवायत

**किया याद**

**डीएवी पीजी कॉलेज के उर्दू विभाग में 'उर्दू में अफसाना निगारी की रवायत' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान**



वाराणसी। डीएवी पीजी कॉलेज में उर्दू विभाग के तत्वावधान में गुरुवार को 'उर्दू में अफसाना निगारी की रवायत' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मुशर्रफ अली ने कहा कि उर्दू में अफसाना (कहानी) लेखन का श्रेय सर्वप्रथम मुंशी प्रेमचंद को जाता है, जिनका शोबे वतन भील का पहला पत्थर है। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने जिस तरह से समाज को देखा, उसे ही अपने अफसाने में उतारा, उर्दू अफसाने में शुरू की गई उनकी रिवायत पर ही आज समूचा उर्दू अफसाना चल रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रेमचंद का साहित्य हमे संयुक्त परिवार के चलन की ओर प्रेरित करता है। डॉ. मुशर्रफ अली ने उर्दू निगारी की रिवायत के आगाज से लेकर वर्तमान तक के तीनों दौर प्रगतिशील, आधुनिक और उत्तर आधुनिक दौर और समकालीन उर्दू रिवायत पर भी प्रकाश डाला। अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य प्रो. मिश्रीलाल ने कहा कि इंसानी जिंदगी और इंसानियत पर उर्दू निगारी की रवायत बहुत प्रभावशाली रही है। इसके पूर्व प्रबंधक अजीत कुमार सिंह यादव ने मुख्य अतिथि डॉ. मुशर्रफ अली का शॉल और स्मृति चिन्ह देकर उनका इस्तकबाल किया। संचालन डॉ. शमशीर अली एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नजमुल हसन ने दिया। इस मौके पर प्रो. प्रशांत कश्यप, प्रो. राकेश राम, डॉ. जियाउद्दीन, डॉ. मयंक कुमार सिंह, डॉ. ओमप्रकाश कुमार, डॉ. अस्मिता तिवारी, डॉ. नीलम सिंह, डॉ. विजय यादव, डॉ. संजीव प्रियदर्शी, डॉ.श्वेता मिश्रा,डॉ. अनुराग चौरसिया सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी शामिल रहे।

مہمانِ خصوصی ڈاکٹر مشرف علی نے اپنے خصوصی لکچر میں کہا کہ "اردو میں افسانہ نگاری کی ایک مستحکم روایت رہی ہے۔ پریم چند کے زورِ قلم سے جس صنف نے چلنا سیکھا اور سماجی و معاشرتی زندگی کی حقیقتوں کی عکاس بنی، آج وہ ایک تناور درخت کی شکل میں موجود ہے۔ عصری حالات و کوائف اور سماجی اور معاشرتی زندگی کے گوناگوں پہلوؤں کو موثر انداز میں پیش کرنے کی صلاحیت صنف افسانہ میں بدرجہ اتم موجود ہے، اپنی اسی خصوصیت کی بناپر صنف افسانہ اردو کی ایک بے حد مقبول صنف ہے جس کے قارئین کی تعداد اچھی خاصی ہے۔ پریم چند سے لے کر موجودہ عہد تک اردو افسانہ نگاروں نے زندگی کے حالات و مسائل کو اپنی فکری و فنی مہارت سے افسانے کے کینوس پر بخوبی پیش کیا ہے اور کئی شاہکار افسانے تخلیق کیے ہیں۔




اس سے قبل پروگرام کی اِفتتاح حسبِ روایت رسمِ شمع روشن اور مہمانوں کے استقبال سے ہوا۔ مہمانوں کا استقال گُل پوشی، شال اور مومنٹو کے ساتھ کیا گیا۔ مہمانوں اور شرکا کے لیے استقبالیہ کلمات ڈاکٹر شمشیر علی، شعبہ اردو، ڈی اے وی پی جی کالج نے ادا کیے اور نظامت کا فریضہ بھی انجام دیا۔ اظہارِ تشکر کی رسم پروگرام کے معاون کنوینر ڈاکٹر نجم الحسن، اسسٹنٹ پروفیسر شعبہ انگریزی، ڈی اے وی جی کالج نے ادا کی۔ اس خصوصی لکچر میں کالج کے طلبہ و طالبات اور مختلف شعبہ کے اساتذہ شامل رہے جس میں پروفیسر ضیاالدین، پروفیسر پرشانت کشیپ، پروفیسر راکیش کمار رام، ڈاکٹر مینک سنگھ، ڈاکٹر سنجیو پریہ درشی، ڈاکٹر اسمیتا تیواری، ڈاکٹر انوراگ چورسیا، ڈاکٹر نیلم سنگھ، ڈاکٹر وجے یادو، ڈاکٹر اوم پرکاش، ڈاکٹر شویتا مشرا اور کالج کے میڈیا انچارج پرتاپ بہادر سنگھ کے ساتھ کالج کے ریسرچ اسکالرز، طلبہ و طالبات نیز بی شعبہ اردو بی ایچ یو کے ریسرچ اسکالزر اور طلبہ و طالبات کی کثیر تعداد موجود رہی۔